!! श्री मोर्वीनन्दन श्याम चालीसा !!

श्रीस्कन्द महापुराण पर आधारित

दोहा

श्री गुरू पदरज शीशधर प्रथम सुमिरू गणेश
ध्यान शारदा हृदयधर भजुँ भवानी महेश
चरण शरण विप्लव पड़े हनुमत हरे कलेश
श्याम चालीसा भजत हुँ जयति खाटू नरेश

चौपाई

वन्दहुँ श्याम प्रभु दुःख भंजन,
विपत विमोचन कष्ट निकंदन
सांवल रूप मदन छविहारी,
केसर तिलक भाल दुतिकारी
मौर मुकुट केसरिया बागा,
गल वैजयंति चित अनुरागा
नील अश्व मौरछड़ी प्यारी,
करतल त्रय बाण दुःखहारी
सूर्यवर्च वैष्णव अवतारे,
सुर मुनि नर जन जयति पुकारे
पिता घटोत्कच मोर्वी माता,

पाण्डव वंशदीप सुखदाता
बर्बर केश स्वरूप अनूपा,
बर्बरीक अतुलित बल भूपा
कृष्ण तुम्हें सुहृदय पुकारे,
नारद मुनि मुदित हो निहारे
मौर्वे पूछत कर अभिवन्दन,
जीवन लक्ष्य कहो यदुनन्दन
गुप्त क्षेत्र देवी अराधना,
दुष्ट दमन कर साधु साधना
बर्बरीक बाल ब्रह्मचारी,
कृष्ण वचन हर्ष शिरोधारी
तप कर सिद्ध देवियाँ कीन्हा,
प्रबल तेज अथाह बल लीन्हा
यज्ञ करे विजय विप्र सुजाना,
रक्षा बर्बरीक करे प्राना
नव कोटि दैत्य पलाशि मारे,
नागलोक वासुकि भय हारे
सिद्ध हुआ चँडी अनुष्ठाना,
बर्बरीक बलनिधि जग जाना

वीर मोर्वेय निजबल परखन,
चले महाभारत रण देखन
माँगत वचन माँ मोर्वि अम्बा,
पराजित प्रति पाद अवलम्बा
आगे मिले माधव मुरारे,
पूछे वीर क्युँ समर पधारे
रण देखन अभिलाषा भारी,
हारे का सदैव हितकारी
तीर एक तीहुँ लोक हिलाये,
बल परख श्री कृष्ण सँकुचाये
यदुपति ने माया से जाना,
पार अपार वीर को पाना
धर्म युद्ध की देत दुहाई,
माँगत शीश दान यदुराई
मनसा होगी पूर्ण तिहारी,
रण देखोगे कहे मुरारी
शीश दान बर्बरीक दीन्हा,
अमृत बर्षा सुरग मुनि कीन्हा
देवी शीश अमृत से सींचत,

केशव धरे शिखर जहँ पर्वत
जब तक नभ मण्डल में तारे,
सुर मुनि जन पूजेंगे सारे
दिव्य शीश मुद मंगल मूला,
भक्तन हेतु सदा अनुकूला
रण विजयी पाण्डव गर्वाये,
बर्बरीक तब न्याय सुनाये
सर काटे था चक्र सुदर्शन,
रणचण्डी करती लहू भक्षन
न्याय सुनत हर्षित जन सारे,
जग में गूँजे जय जयकारे
श्याम नाम घनश्याम दीन्हा,
अजर अमर अविनाशी कीन्हा
जनहित प्रकटे खाटू धामा,
लखदाता दानी प्रभु श्यामा
खाटू धाम मौक्ष का द्वारा,
श्याम कुण्ड बहे अमृत धारा
शुदी द्वादशी फाल्गुण मेला,
खाटूधाम सजे अलबेला

एकादशी व्रत ज्योत द्वादशी,
सबल काय परलोक सुधरशी
खीर चूरमा भोग लगत है,
दुःख दरिद्र कलेश कटत हैं
श्याम बहादुर सांवल घ्यायें,
आलु सिँह हृदय श्याम बसायें
मोहन मनोज विप्लव भाँखे,
श्याम धणी म्हारी पत राखे
नित प्रति जो चालीसा गावे,
सकल साध सुख वैभव पावे
श्याम नाम सम सुख जग नाहीं,
भव भय बन्ध कटत पल माहीं

दोहाः–

त्रिबाण दे त्रिदोष मुक्ति दर्शा दे आत्मज्ञान
चालीसा दे प्रभु भुक्ति सुमिरण दे कल्यान
खाटू नगरी धन्य हैं श्याम नाम जयगान
अगम अगोचर श्याम हैं विरदहिं स्कन्द पुरान

इति आचार्य डा0 मनोज विप्लव,सिरसा
कृत श्री मोर्वी नन्दन श्याम चालीसा सम्पूर्ण